

अमेरिकी डॉलर का प्रभुत्व (Hegemony) और घरेलू मुद्रा में अंतरराष्ट्रीय व्यापार की बढ़ती प्रवृत्ति

डॉ. चांदनी मिश्रा

अतिथि विद्वान - वाणिज्य विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

सारांश (Abstract)

अमेरिकी डॉलर का प्रभुत्व वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख तत्व रहा है, जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वित्तीय लेन-देन और आरक्षित मुद्रा के रूप में वर्चस्व बनाए हुए है। हालांकि, जनवरी 2026 में डॉलर इंडेक्स 97 से नीचे गिरकर चार साल के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया, जबकि सोने की कीमतें \$4,600 प्रति औंस से ऊपर पहुंच गईं। BRICS देशों और अन्य उभरते बाजारों द्वारा घरेलू मुद्राओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार की बढ़ती प्रवृत्ति ने डॉलर के प्रभुत्व को गंभीर चुनौती दी है। रूस-भारत व्यापार का लगभग 96% और रूस-चीन व्यापार का लगभग 100% स्थानीय मुद्राओं में हो रहा है। यह पेपर डॉलर के प्रभुत्व के ऐतिहासिक आधारों, वर्तमान चुनौतियों, डी-डॉलराइजेशन की प्रक्रिया और इसके वैश्विक प्रभावों का विश्लेषण करता है। अनुसंधान से पता चलता है कि डॉलर का वैश्विक आरक्षित हिस्सा 56-58% तक गिर चुका है, जबकि स्थानीय मुद्राओं में व्यापार की प्रवृत्ति डॉलर की निर्भरता को कम कर रही है, जो बहुधुवीय वैश्विक अर्थव्यवस्था की ओर संकेत करती है। यह अध्ययन माध्यमिक डेटा, रिपोर्ट्स और विशेषज्ञ विश्लेषणों पर आधारित है।



कीवर्ड्स (Keywords)

अमेरिकी डॉलर प्रभुत्व, डी-डॉलराइजेशन, स्थानीय मुद्राओं में व्यापार, ब्रिक्स, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वैश्विक आरक्षित मुद्रा, बहुधुवीय अर्थव्यवस्था, प्रतिबंध, रेनमिनबी, भू-राजनीतिक परिवर्तन, डॉलर इंडेक्स गिरावट, सोने का उछाल, ट्रंप नीतियां, सीबीडीसी।

परिचय (Introduction)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, अमेरिकी डॉलर वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्रबिंदु रहा है। ब्रेटन वुड्स समझौते (1944) ने डॉलर को सोने से जुड़ी एक स्थिर मुद्रा के रूप में स्थापित किया, जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्तीय प्रणाली का आधार बना। जनवरी 2026 तक, डॉलर वैश्विक विदेशी मुद्रा लेन-देन का 89%, वैश्विक आरक्षित मुद्राओं का लगभग 56-58% और वैश्विक व्यापार का आधा हिस्सा रखता है। यह प्रभुत्व अमेरिका की आर्थिक शक्ति, गहन वित्तीय बाजारों और राजनीतिक स्थिरता पर आधारित है। हालांकि, हाल के दशकों में, विशेष रूप से 2008 की वैश्विक वित्तीय संकट के बाद, और अब 2026 में ट्रंप की नीतियों के प्रभाव से, डॉलर के इस प्रभुत्व पर सवाल उठने लगे हैं।

घरेलू मुद्राओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार की बढ़ती प्रवृत्ति, जिसे डी-डॉलराइजेशन कहा जाता है, एक प्रमुख चुनौती है। BRICS देशों ने स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा दिया है, जैसे चीन का रेनमिनबी (आरएमबी) और रूस का रूबल। उदाहरण के लिए, रूस-यूक्रेन संघर्ष के बाद लगाए गए अमेरिकी प्रतिबंधों ने कई देशों को डॉलर से दूर जाने के लिए प्रेरित किया। 2026 में, रूस-भारत व्यापार का 96% और रूस-चीन का लगभग 100% स्थानीय मुद्राओं में हो रहा है। BRICS ने आंतरिक व्यापार में स्थानीय मुद्राओं का हिस्सा 35% से 50% तक बढ़ाने की घोषणा की है। यह पेपर डॉलर के प्रभुत्व के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान रुझानों, डी-डॉलराइजेशन के प्रभावों और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करेगा। उद्देश्य यह समझना है कि क्या डॉलर का प्रभुत्व स्थायी है या बहुधुवीय मुद्रा प्रणाली की ओर बढ़ रही है। अनुसंधान



वैश्विक आर्थिक असमानता, प्रतिबंधों के दुरुपयोग और उभरते बाजारों की भूमिका पर केंद्रित है। डी-डॉलराइजेशन की प्रक्रिया में, देश अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को मजबूत करने के लिए स्थानीय मुद्राओं का उपयोग बढ़ा रहे हैं, जो वैश्विक व्यापार की गतिशीलता को बदल रही है। उदाहरणस्वरूप, सोने की कीमत \$4,600 प्रति औंस तक पहुंच गई है, जो डॉलर से दूर जाने का संकेत है। यह परिवर्तन न केवल आर्थिक है, बल्कि भू-राजनीतिक भी, क्योंकि यह अमेरिकी प्रतिबंधों से बचाव प्रदान करता है। इस अध्ययन का महत्व यह है कि यह डी-डॉलराइजेशन के वैश्विक प्रभावों को समझने में मदद करता है, विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए। आगे के खंडों में, हम ऐतिहासिक संदर्भ, पद्धति, मुख्य भाग और निष्कर्ष पर चर्चा करेंगे।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों पर आधारित है। मुख्य रूप से माध्यमिक डेटा का उपयोग किया गया है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्ट्स (जैसे आईएमएफ, विश्व बैंक, बीआईएस), शोध पत्र, जर्नल आर्टिकल्स और समाचार स्रोत शामिल हैं। डेटा संग्रह के लिए वेब सर्च टूल्स का उपयोग किया गया, जैसे "US dollar dominance de-dollarization trends 2026" पर आधारित खोज, जिससे 20 स्रोत प्राप्त हुए। X प्लेटफॉर्म पर कीवर्ड सर्च ("de-dollarization since:2026-01-01") से हाल की चर्चाओं और रीयल-टाइम ट्रेंड्स का विश्लेषण किया गया, जिसमें BRICS की रणनीतियां और डी-डॉलराइजेशन की सार्वजनिक धारणाएं शामिल हैं। विश्लेषण के लिए डबल-मैट्रिक्स अप्रोच का उपयोग किया गया, जहां एक मैट्रिक्स डॉलर के प्रभुत्व के कारकों (व्यापार, आरक्षित, लेन-देन) को मापता है, और दूसरा डी-डॉलराइजेशन के प्रभावों (स्थानीय मुद्रा उपयोग, प्रतिबंध प्रभाव) को। डेटा की वैधता सुनिश्चित करने के लिए क्रॉस-रेफरेंसिंग की गई, और पूर्वाग्रह से बचने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों (पश्चिमी और गैर-पश्चिमी स्रोत) को शामिल किया गया। अध्ययन की सीमाएं: प्राथमिक डेटा की कमी और तेजी से बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य। इसके अतिरिक्त, मात्रात्मक विश्लेषण के लिए आईएमएफ के डेटा का उपयोग किया



गया, जैसे डॉलर की आरक्षित हिस्सेदारी में गिरावट (2025 में 58% से 2026 में 56-58% तक)। गुणात्मक विश्लेषण में केस स्टडीज शामिल हैं, जैसे ब्रिक्स देशों की स्थानीय मुद्रा व्यापार रणनीतियां।

मुख्य भाग (Main Body)

अनुभाग 1: अमेरिकी डॉलर के प्रभुत्व के ऐतिहासिक आधार (Historical Foundations of US Dollar Dominance)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, ब्रेटन वुड्स प्रणाली ने डॉलर को वैश्विक आरक्षित मुद्रा बनाया। 1971 में निक्सन द्वारा सोने से अलग किए जाने के बावजूद, डॉलर का प्रभुत्व बना रहा, क्योंकि अमेरिका की अर्थव्यवस्था वैश्विक जीडीपी का 25% हिस्सा रखती है और उसके वित्तीय बाजार गहन हैं। डॉलर 89% वैश्विक लेन-देन में उपयोग होता है। यह प्रभुत्व "अत्यधिक विशेषाधिकार" प्रदान करता है, जहां अमेरिका सस्ते कर्ज ले सकता है और प्रतिबंधों का उपयोग कर सकता है। हालांकि, 2008 संकट ने डॉलर की कमजोरियों को उजागर किया, जिससे डी-डॉलराइजेशन की चर्चा शुरू हुई। ऐतिहासिक रूप से, डॉलर के प्रभुत्व ने वैश्विक व्यापार को स्थिरता प्रदान की, लेकिन अब यह असमानता का स्रोत बन रहा है। विस्तार से, ब्रेटन वुड्स के बाद, डॉलर ने तेल व्यापार (पेट्रो-डॉलर) में अपनी भूमिका मजबूत की। हालांकि, अब देश जैसे चीन और रूस इस प्रणाली से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे हैं। जनवरी 2026 में, डॉलर इंडेक्स 97 से नीचे गिरा है।

अनुभाग 2: घरेलू मुद्राओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार की बढ़ती प्रवृत्ति (Growing Trend of International Trade in Domestic Currencies)

डी-डॉलराइजेशन का मतलब डॉलर के उपयोग में कमी है। BRICS ने स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा दिया; उदाहरण के लिए, चीन का CIPS सिस्टम और रूस का SPFSI 2026 से, BRICS में RMB का उपयोग बढ़ा। भारत और रूस रुपये-रुबल व्यापार कर रहे हैं, 96% स्थानीय मुद्राओं में। कारण: अमेरिकी



प्रतिबंध, उच्च मुद्रास्फीति और वैश्विक असमानता। ASEAN और अफ्रीकी देश भी स्थानीय मुद्राओं की ओर बढ़ रहे हैं। 2026 में, ब्रिक्स समिट में डी-डॉलराइजेशन को बढ़ावा दिया गया। इस प्रवृत्ति के उदाहरणों में, ब्राजील-चीन व्यापार में स्थानीय मुद्रा 40% है। डिजिटल मुद्राएं जैसे CBDC भी इस ट्रेंड को बढ़ावा दे रही हैं।

अनुभाग 3: वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव (Impacts on Global Economy)

डी-डॉलराइजेशन डॉलर के प्रभुत्व को कमजोर कर सकती है, लेकिन अभी स्थिर है। डॉलर का हिस्सा 56-58% तक गिरा, लेकिन गैर-पारंपरिक मुद्राओं में वृद्धि हुई। अमेरिका के लिए, यह उधार लेने की लागत बढ़ा सकता है। उभरते बाजारों के लिए, यह स्वतंत्रता प्रदान करता है। भू-राजनीतिक प्रभाव: ट्रंप की नीतियां (टैरिफ) डी-डॉलराइजेशन को तेज कर रही हैं। वैश्विक व्यापार में, स्थानीय मुद्राओं का उपयोग लागत कम करता है और जोखिम घटाता है। हालांकि, यह संक्रमण अवधि में अस्थिरता पैदा कर सकता है।

अनुभाग 4: चुनौतियां और भविष्य की संभावनाएं (Challenges and Future Prospects)

डॉलर का प्रभुत्व बनी रहेगी, लेकिन बहुधुवीय प्रणाली संभव है। डिजिटल मुद्राएं चुनौती हैं। हालांकि, डॉलर की तरलता और विश्वास अभी बेजोड़ है। भविष्य में, ब्रिक्स जैसी संस्थाएं वैकल्पिक प्रणालियां विकसित करेंगी। 2026 में, डॉलर का पतन जारी रह सकता है, लेकिन पूर्ण रूप से नहीं।

निष्कर्ष (Conclusion)

अमेरिकी डॉलर का प्रभुत्व मजबूत है, लेकिन घरेलू मुद्राओं में व्यापार की प्रवृत्ति इसे चुनौती दे रही है। BRICS और अन्य देश बहुधुवीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं, जो सहयोग पर आधारित होगी। जनवरी 2026 में, डॉलर इंडेक्स की गिरावट और सोने की रिकॉर्ड ऊंचाई इस बदलाव को दर्शाती है। भविष्य में, डॉलर प्रमुख रहेगा, लेकिन उसका वर्चस्व कम होगा। नीति सिफारिश: देशों को विविधीकरण अपनाना चाहिए, जैसे



CBDC और स्थानीय मुद्रा समझौतों को बढ़ावा देना। यह परिवर्तन वैश्विक असमानता को कम कर सकता है, लेकिन संक्रमण में जोखिम हैं, जैसे बाजार अस्थिरता। विकासशील देशों के लिए, यह अवसर है अपनी मुद्राओं को मजबूत करने का। हालांकि, अमेरिका की नीतियां (जैसे टैरिफ और फेड हस्तक्षेप) इस प्रक्रिया को तेज कर सकती हैं। कुल मिलाकर, डी-डॉलराइजेशन एक दीर्घकालिक प्रवृत्ति है जो बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था की ओर इशारा करती है। X पर चर्चाओं से पता चलता है कि रूस-भारत-चीन व्यापार में स्थानीय मुद्राओं का उपयोग 96-100% पहुंच गया है, जो डी-डॉलराइजेशन को तेज कर रहा है। भविष्य में, 2026 के अंत तक डॉलर में 3-5% की गिरावट संभव है, लेकिन पूर्ण पतन नहीं। नीतिगत सिफारिशें: उभरते बाजारों को सोने और स्थानीय मुद्राओं में निवेश बढ़ाना चाहिए, जबकि अमेरिका को प्रतिबंधों का दुरुपयोग रोकना चाहिए। यह अध्ययन दिखाता है कि डी-डॉलराइजेशन वैश्विक अर्थव्यवस्था को अधिक समावेशी बना सकता है।

संदर्भ (References)

- [1]. The future of dollar dominance - The International Institute for Strategic Studies (2026). <https://www.iiss.org/online-analysis/six-analytic-blog/2026/01/the-future-of-dollar-dominance>
- [2]. De-dollarization: The end of dollar dominance? - J.P. Morgan (2025). <https://www.jpmorgan.com/insights/global-research/currencies/de-dollarization>
- [3]. USD Dollar Trend Forecast: Dollar Index Falls Below 97.0 to 4-Year Low - TradingKey (2026). <https://www.tradingkey.com/analysis/forex/usd/261532251-usd-dollar-fed-2026-index-forecast-tradingkey>
- [4]. The Dollar Is Facing an End to Its Dominance - WIRED (2025). <https://www.wired.com/story/the-dollar-is-facing-an-end-to-its-dominance>
- [5]. De-Dollarization: Is US dollar dominance dented? - State Street (2023). <https://www.statestreet.com/us/en/insights/is-US-dollar-dominance-dented>
- [6]. The Dollar's Day of Reckoning: 2026 and the New Financial Fault Lines - LinkedIn (2026). <https://www.linkedin.com/pulse/dollars-day-reckoning-2026-new-financial-fault-lines-harshad-shah-dkvjf>
- [7]. Five trends to watch in the global economy in 2026 - Atlantic Council



- (2026). <https://www.atlanticcouncil.org/dispatches/five-trends-to-watch-in-the-global-economy-in-2026>
- [8]. No consistent dollarization or de-dollarization trend - The Asset
(2026). <https://w.theasset.com/article/55752/no-consistent-dollarization-or-de-dollarization-trend>
- [9]. The changing role of the US dollar - Brookings Institution
(2024). <https://www.brookings.edu/articles/the-changing-role-of-the-us-dollar>
- [10]. US dollar: 'Wounded hegemon' or secure as most powerful currency on earth? - Al Jazeera
(2026). <https://www.aljazeera.com/news/2026/1/27/us-dollar-wounded-hegemon-or-secure-as-most-powerful-currency-on-earth>

